आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2021-23

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 9 अंक : 10 जून, 2022 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. (डॉ.) सतीश के. गर्ग

कुलपति सन्देश

पशुपालकों की स्थिर आय का साधन दुग्ध उत्पादन

प्रिय पशुपालक व किसान भाइयों और बहिनों।

विश्व दुग्ध दिवस के अवसर पर आप सभी को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं। भारत एक कृषि प्रधान देश है जिसमें पशुपालन का विशेष महत्व है। भारत में दुनिया की सबसे बड़ी पशुधन आबादी है, जो भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास और स्थिरता में एक बड़ी भूमिका निभाता है। भारत में लगभग दो करोड़ लोग आजीविका के लिए पशुपालन पर आश्रित है। पशुपालन क्षेत्र भारत के सकल घरेलू उत्पाद में लगभग 4 प्रतिशत का योगदान करता है। वर्षभर अतिरिक्त और स्थिर आय देने के कारण पशुपालन को हमेशा किसानों और पशुपालकों की सामाजिक और आर्थिक स्थिति के उत्थान में एक महत्वपूर्ण कारक माना गया है तथा यह व्यवसाय प्रदेश के दो तिहाई ग्रामीण समुदायों को आजीविका प्रदान करता है। भारत विश्व का सबसे बड़ा दूध उत्पादक देश है। दूध को पूर्ण संतुलित आहार के रूप में देखा जाता है। मानव हो अथवा पशु उसके जीवन का पहला भोजन दूध ही होता है तथा इसीलिए जीवन पर्यन्त अच्छे स्वास्थ्य के लिए दूध का सेवन करता है। भारत में मां व गाय के दूध को अमृत की संज्ञा दी गई है। दूध की महत्ता को देखते हुए संयुक्त राष्ट्र के खाद्य एवं कृषि संगठन ने हर वर्ष 1 जून को विश्व दुग्ध दिवस के रूप में मनाने की शुरूआत की ताकि दुनिया भर के लोग दूध और दूध निर्मित पदार्थो की महत्ता व उपयोगिता को समझे। संयुक्त राष्ट्र के खाद्य एवं कृषि संगठन ने 1 जून, 2001 को विश्व दुग्ध दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया जो लगातार प्रतिवर्ष मनाया जा रहा है। विश्व दुग्ध दिवस दूध के पोषक मूल्य और इसे आहार में शामिल करने की आवश्यकताओं के बारे में लोगों में जागरूकता लाने के लिए मनाया जाता है, इसके साथ ही दूध को वैश्विक भोजन के रूप में मान्यता देना भी एक प्रमुख उद्देश्य है। दूध और डेयरी से जुड़े उत्पादों से देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत किया जा सकता है। भारत में प्रति व्यक्ति दूध उपलब्धता वैश्विक स्तर से कम है, इसे बढ़ाने के लिए पशुपालकों को उन्नत नस्ल के पशुओं का चयन कर वैज्ञानिक विधि से पशुपालन अपनाने की आवश्यकता है। इसी क्रम में राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर की सभी इकाइयों तथा समस्त महाविद्यालयों में विश्व दुग्ध दिवस मनाया जा रहा है जिसके अन्तर्गत गोष्ठियां, प्रशिक्षण एवं जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं। विश्व दुग्ध दिवस के अवसर पर पशुपालन क्षेत्र से जुड़े सभी पशुचिकित्सकों, पशुचिकित्सा कर्मियों, पशुपालक भाइयों व अन्य सभी को पुनः शुभकामनाएं व बधाई।

प्रो. (डॉ.) सतीश कुमार गर्ग

माननीय राज्यपाल श्री कलराज मिश्र से कुलपति प्रो. सतीश कुमार गर्ग ने की शिष्टाचार भेंट

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।

–महात्मा गांधी

विश्वविद्यालय समाचार

वेटरनरी विश्वविद्यालय को मिली आई.सी.ए.आर. से पांच वर्षों के लिए मान्यता

राजुवास को वित्तीय सहायता व संसाधन होंगे उपलब्ध

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली ने राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर को अगले पांच वर्षों के लिए अपनी मान्यता (अधिस्वीकरण) प्रदान की है। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सतीश कुमार गर्ग के नेतृत्व में प्रस्तुत की गई, स्व–अध्ययन रिपोर्ट के बाद आई.सी.ए.आर. की चार सदस्यीय पीयर रिव्यू टीम की आंकलन रिपोर्ट के आधार पर आगामी पांच वर्षों 2021 से 2026 के लिए ग्रेड़ 'ए' के साथ राजुवास को मान्यता प्रदान की गई है। कुलपति प्रो. सतीश कुमार गर्ग ने बताया कि आई.सी.ए.आर. से आगामी पांच वर्षों के लिए अधिस्वीकरण से विश्वविद्यालय में छात्र शोध, फैकल्टी कौशल विकास, उन्नत पशुधन प्रबंधन एवं उन्नत चिकित्सकीय सुविधाओं को बल मिलेगा तथा वेटरनरी विश्वविद्यालय को एक नई पहचान मिलेगी। कुलपति प्रो. गर्ग ने बताया कि विश्वविद्यालय के सभी महाविद्यालयों एवं इकाइयों के समुचित प्रयासो से हमें यह सफलता मिली है अब हम पशुचिकित्सा शिक्षा के नये आयामों व पशुपालकों के कौशल विकास के साथ–साथ नई परियोजनाओं को अंजाम दे सकेंगे।

जुनोटिक बीमारियों से बचाव हेतु शोध कार्यो को देनी होगी प्राथमिकता: डॉ. बी.एन.त्रिपाठी, उपमहानिदेशक (पशु विज्ञान) आई.सी.ए.आर.

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली के उपमहानिदेशक (पशु विज्ञान) डॉ. बी.एन. त्रिपाठी ने वेटरनरी विश्वविद्यालय का दौरा किया तथा पशुचिकित्सा के क्षेत्र में शिक्षण, अनुसंधान एवं प्रसार के कार्यों की जानकारी प्राप्त की। वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के कुलपति प्रो. सतीश कुमार गर्ग की अध्यक्षता में 28 मई को एक इन्टरेक्टिव मीटिंग का आयोजन किया गया। कुलपति प्रो. सतीश कुमार गर्ग ने मीटिंग में विश्वविद्यालय की शैक्षणिक, अनुसंधान एवं प्रसार गतिविधियों की विस्तृत जानकारी प्रदान की और कहा कि विश्वविद्यालय राज्य में पशुचिकित्सा सेवा, गौ संरक्षण एवं सवंर्द्धन, पशुपालक प्रशिक्षण एवं कौशल विकास एवं इन्टर्प्रन्यूरशिप के क्षेत्र में अपने महाविद्यालयों, पशु अनुसंधान केन्द्रों एवं पशु विज्ञान केन्द्रों के माध्यम से महत्वपूर्ण सेवाएं प्रदान कर रहा है। डॉ. बी.एन. त्रिपाठी ने कहा कि विगत वर्षो में वातावरणीय प्रभावों के कारण विश्व में विभिन्न बीमारियों का प्रकोप बढ़ा है इनमे से 75 प्रतिशत बीमारियां जुनोटिक प्रकार की है, जो कि पशुओं के साथ–साथ मनुष्यों को भी प्रभावित करती है। आज हमें उन्नत शोध पर ध्यान देना होगा। वेक्सीन उत्पादन एवं प्रमाणीकरण पर कार्य करना होगा ताकि विभिन्न संक्रामक बीमारियों के प्रकोपों से होने वाले आर्थिक एवं जैविक नुकसान से बचा जा सके। ई.टी.टी., ई.वी.एफ. और कृत्रिम गर्भाधान तकनीकों को अपनाते हुए अच्छे गुणवत्ता वाले जर्मप्लाज्म को राज्य में बढ़ावा देना चाहिए। प्रो. त्रिपाठी ने विश्वविद्यालय द्वारा शिक्षा, अनुसंधान एवं प्रसार कार्यो की सराहना करते हुए नवीन शोधों एवं शोध योजनाओं को बढ़ावा देने का सुझाव दिया। प्रो. त्रिपाठी ने वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर के वैक्सीनोलोजी सेन्टर, पशुचिकित्सा संकुल एवं पशु फार्म का भ्रमण किया एवं विश्वविद्यालय द्वारा पशुपालकों के लिए दी जाने वाली पशुचिकित्सा सेवाओं की भूरी–भूरी प्रशंसा की। इस अवसर पर निदेशक, उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर डॉ. ए. साहु, निदेशक अश्व अनुसंधान केन्द्र, हिसार डॉ. यशपाल, प्रमुख वैज्ञानिक सी.एस.डब्ल्यू. आर.आई., अविकानगर (टोंक) डॉ. राघवेन्द्रसिंह सहित विश्वविद्यालय के कुलसचिव एवं अधिष्ठाता प्रो. आर.के.सिंह सहित डीन–डायरेक्टर, शिक्षक एवं विभागाध्यक्ष मौजूद रहे। निदेशक प्रसार शिक्षा, डॉ. राजेश कुमार धूड़िया ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अशोक गौड़ ने किया।

श्री गौधाम पथमेड़ा के श्री दत्तशरणानंद जी महाराज ने किया राजुवास का भ्रमण

श्री गौ–धाम पथमेड़ा के संस्थापक एवं प्रधान संरक्षक गो ऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंद जी महाराज ने 24 मई को विश्वविद्यालय का भ्रमण कर आधुनिक चिकित्सा सुविधाओं, अनुसंधान कार्यों एवं गौ–संवर्धन कार्यों का अवलोकन किया। कुलपति प्रो. सतीश कुमार गर्ग ने राज्य में गौ–संरक्षण एवं संवर्धन हेतु विश्वविद्यालय द्वारा इस क्षेत्र में किए जा रहे कार्यों की विस्तृत जानकारी दी। देशी गोवंश के साथ–साथ अन्य प्राणियों की आधुनिक चिकित्सा उपकरणों की सहायता से विभिन्न शल्य चिकित्सा, नेत्र चिकित्सा, पशु दन्त चिकित्सा आदि कार्यों को देखकर काफी प्रभावित हुए तथा विश्वविद्यालय की सराहना की साथ ही उन्होंने विशेष रूप से एक्स–रे मशीन, स्लिंग उपकरण, ऑपथेलमोलॉजी, चिकित्सा सुविधाओं को पथमेड़ा में स्थापित करने की इच्छा जताई जिसके लिए कुलपति प्रो. गर्ग ने विश्वविद्यालय द्वारा उन्हें तकनीकी सहायता प्रदान करने का आश्वासन दिया। पशु अनुसंधान केंद्र (राठी गोवंश) का अवलोकन कर कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा राजस्थान की देशी गोवंश के उन्नयन एवं संरक्षण हेतु बहुत ही सराहनीय कार्य किये जा रहे हैं। इससे राज्य के पशुपालक भाई लाभान्वित हो रहे हैं।

वेटरनरी विश्वविद्यालय का 13वाँ स्थापना दिवस

रक्तदान शिविर एवं पशुपालक संगोष्ठियों का हुआ आयोजन

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशुविज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर का 13वाँ स्थापना दिवस समारोहपूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. रक्षपाल सिंह, कुलपति स्वामी केशवानन्द कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर ने कहा कि इस विश्वविद्यालय ने अल्पकाल में ही राज्य ही नहीं पूरे देश में एक अलग स्थान बनाया है। इस विश्वविद्यालय के छात्र देश में ख्याति प्राप्त अन्य विश्वविद्यालयों एवं संस्थानों में विभिन्न उच्च पदों पर कार्यरत है। यह हमारे लिए गर्व की बात है। सम्माननीय अतिथि प्रो. अबरिश शरण विद्यार्थी, कुलपति, बीकानेर तकनीकी विश्वविद्यालय ने पशुचिकित्सा, अनुसंधान एवं शिक्षण के क्षेत्र में किये गये कार्यों की सराहना की। उन्होंने विद्यार्थियों को विनम्रशील बनने के साथ–साथ नैतिक मूल्यों को अपनाने एवं सर्वांगिण विकास हेतु प्रोत्साहित किया। कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने सभी अतिथियों का स्वागत किया एवं विश्वविद्यालय के 13वें स्थापना दिवस पर सहयोगी रहे विश्वविद्यालय के एल्युमिनाई, सेवानिवृत्त अध्यापकगण एवं वर्तमान फैकल्टी सदस्यों के कार्यों की सराहना की। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय 12 वर्षों के अल्पकाल में ही राज्य के 22 जिलों में अपनी इकाइयों को स्थापित कर चुका है उन्होंने कहा कि राज्य के 60 प्रतिशत लोगो की आजीविका पशुपालन पर आधारित है। हमें हमारी उपलब्धियों के साथ–साथ चुनौतियों को भी ध्यान में रखते हुए विश्वविद्यालय को सर्वोच्च शिखर पर ले जाना है। हमे रोजगारोन्मुखी शिक्षा, गुणवतायुक्त अनुसंधान एवं आर्थिक पशुपालन पर विशेष ध्यान देना होगा। स्थापना दिवस के अवसर पर तीनों संगठन महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालय की अन्य इकाइयों में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के प्रारम्भ में डॉ. हेमन्त दाधीच, कार्यवाहक अधिष्ठाता द्वारा स्वागत भाषण दिया गया। प्रो. राजेश कुमार धूडिया, निदेशक प्रसार शिक्षा ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. प्रतिष्ठा शर्मा ने किया।

विश्वविद्यालय की प्रथम महिला श्रीमती मन्जू गर्ग ने भी किया रक्तदान

वेटरनरी विश्वविद्यालय के तीनों सम्बद्ध महाविद्यालयों में स्थापना दिवस के अवसर पर रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। वेटरनरी कॉलेज बीकानेर में पी.बी.एम. अस्पताल के ब्लड़ बैंक के वरिष्ठ चिकित्सक डॉ. कुलदीप मेहरा एवं डॉ. कालूराम मेघवाल के नेतृत्व में कुल 75 यूनिट रक्तदान सहित कुल 195 यूनिट रक्तदान किया गया। जिसमें विद्यार्थियों के साथ–साथ शैक्षणिक एवं अशैक्षणिक कर्मचारियों ने रक्तदान में हिस्सा लिया। विश्वविद्यालय की प्रथम महिला श्रीमती मन्जू गर्ग ने रक्तदान कर विद्यार्थियों का मनोबल बढाया।

राजुवास ई–पशुपालक चौपाल का आयोजन

पशुओं में रेबीज रोग से बचाव ही उपाय

वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा राज्य स्तरीय ई–पशुपालक चौपाल 11 मई को आयोजित की गई। पशुओं में रेबीज रोग : कारण और बचाव विषय पर प्रो. अनिल आहुजा ने पशुपालकों से वार्ता की। निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने विषय प्रवर्तन करते हुए बताया कि पशुओं में रेबीज रोग एक भयावाह बीमारी है जो प्रायः कुत्तो के काटने से पशुओं एवं मनुष्य में होती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार दुनियाभर में हर साल लगभग 59,000 लोगों की रेबीज रोग के कारण मृत्यु हो जाती है। भारत में प्रतिवर्ष 18,000 से 20,000 लोगों की मृत्यु रेबीज के कारण होती है। इस रोग से बचाव ही उपाय है। आमंत्रित विशेषज्ञ प्रो. अनिल आहुजा, पूर्व निदेशक क्लीनिक, वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर ने बताया कि रेबीज या हिड़काव रोग प्रायः स्तनधारी या गर्म खून वाले जीवों में होता है। इस रोग का मुख्य कारण विषाणु है जो कि कुत्ते, बिल्लियों की लार में पाया जाता है। चमगादड़ भी इस वायरस के वाहक का कार्य करते है। पशुओं में यह रोग प्रायः कुत्तो में काटने से फैलता है शरीर पर घावों के माध्यम से यह विषाणु शरीर में तंत्रिका–तंत्र के माध्यम से मस्तिष्क तक पहुंच जाता है एवं इस बीमारी के लक्षण उत्पन्न करता है। रेबीज रोग से ग्रसित पशु उत्तेजित नजर आते है एवं शरीर की मांसपेशियो में लकवा उत्पन्न हो जाने से खाने–पीने में असमर्थ हो जाते हैं। उत्तेजना की अवस्था में रेबीज ग्रसित पशु दूसरे पशुओं को काटते हैं तो यह रोग होता है। चूंकि रोग के लक्षण उत्पन्न हो जाने पश्चात् इस रोग का कोई ईलाज नहीं है अतः पशुपालकों को समय पर अपने पशुओं को एन्टीरेबीज टीकाकरण करवाना चाहिए। पशुपालक भाई पशुओं के व्यवहार में आए अचानक बदलाव, रेबीज रोग के लक्षणों को पहचानकर एवं समय पर टीकाकरण करवाकर इस रोग के कुप्रभाव से पशुओं को और अपने आप को बचा सकते हैं।

दूधारू पशुओं की उत्पादकता बढ़ाने के टिप्स दिये डॉ. भौंसले ने

वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा राज्य स्तरीय ई–पशुपालक चौपाल 25 मई को आयोजित की गई। दूध देने वाले पशुओं की उत्पादकता कैसे बढ़ाए विषय पर महाराष्ट्र के डॉ. दिनेश भौंसले ने पशुपालकों से वार्ता की। निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने विषय प्रवर्तन करते हुए बताया कि पशुओं की दूध उत्पादकता के लिए कई कारक जिम्मेदार है जिसमें पशुओं की नस्ल एवं उनका रखरखाव मुख्य कारक है। पशु खाद्य प्रबन्ध को नियंत्रित करके हम पशु को अधिक उत्पादक बना सकते हैं एवं पशुपालकों को भी अनावश्यक खर्चो से बचाकर उनकों आर्थिक रूप से सम्पन्न बना सकते हैं। आमंत्रित विशेषज्ञ डॉ. दिनेश भौंसले, निदेशक ए.बी विस्टा साउथ एशिया, पूणे (महाराष्ट्र) ने ई–चौपाल के माध्यम से पशुपालकों को विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि पशुपालन की 70 प्रतिशत लागत पशुओं के खाद्य एवं पोषण पर आती है। पशुओं को अपर्याप्त पोषण या अधिक पोषण दोनों ही पशुपालकों को आर्थिक नुकसान पहुँचाता है अतः पशुओं का खाद्य प्रबन्धन उनकी नस्ल, उम्र, भार एवं उत्पादन की अवस्था के अनुरूप होना चाहिए। पशुओं को केवल सूखा चारा, केवल हरा चारा या केवल कपास नहीं खिलाना चाहिए। संतुलित पोषण से पशुओं की उत्पादकता बनी रहती है। अधिक हरे चारे की उपलब्धता की अवस्था में साईलेज बना लेना चाहिए ताकि चारे की अनुपलब्धता की अवस्था में उसे उपयोग किया जा सके। पशु खाद्य में अनाज का दलिया, चूरी, खल एवं चापड़ को खिलाना चाहिए। सूखा एवं हरा चारा 70 प्रतिशत एवं पशु बांटा 30 प्रतिशत के हिसाब से खिलाना चाहिए। शुद्ध पानी पर्याप्त मात्रा में पशुओं को उपलब्ध करवाना चाहिए। इसके साथ ही डॉ. भौंसले ने पशुपालकों को प्रोबायोटिक, बायपास फैट, बायपास प्रोटीन, रूमन बफर एवं मिनरल मिक्सचर की उपयोगिता पर भी विस्तृत जानकारी प्रदान की।

गोबर–गोमूत्र प्रसंस्करण प्रशिक्षण अभियान पर कार्यशाला

बीकानेर को गौबर–गोमूत्र प्रसंस्करण कार्य हेतु मॉडल रूप में विकसित करें : संभागीय आयुक्त नीरज के. पवन

वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा गोबर–गोमूत्र के जैविक उत्पादों के प्रसंस्करण प्रशिक्षण विषय पर 30 मई को कार्यशाला का आयोजन किया गया। वेटरनरी विश्वविद्यालय और राजस्थान गौ–सेवा परिषद के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस कार्यशाला में कृषि, पशुपालन, नाबार्ड, कृषि विश्वविद्यालय, आत्मा, महिला बाल विकास, आदि विभागों के प्रभारी अधिकारियों ने भाग लिया। इस अवसर पर संभागीय आयुक्त डॉ. नीरज के. पवन ने कहा कि गोबर–गोमूत्र प्रसंस्करण प्रशिक्षण एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम है। वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा इस बाबत राज्य सरकार को भिजवाई गई परियोजना के लिए प्रशासनिक स्तर पर पूरा सहयोग किया जाएगा। उन्होंने कहा कि बीकानेर संभाग को इसके लिए एक मॉडल स्वरूप में विकसित करने के लिए ग्रामीण स्तर पर गौ उत्पादों के जैविक प्रसंस्करण कार्यों के लिए युवाओं को प्रशिक्षण दिया जाये। बीकानेर जिले के 9 ब्लॉक में यह प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे जिसमें वेटरनरी विश्वविद्यालय के साथ–साथ कृषि एवं पशुपालन विभाग सहयोगी रहेंगे। प्रो. ए.के. गहलोत, राष्ट्रीय संयोजक, राजस्थान गौ–सेवा परिषद् एवं संस्थापक व पूर्व कुलपति ने कहा कि गांव में गोबर एवं गोमूत्र पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है ग्रामीण युवाओं के प्रशिक्षण उपरान्त इसका समुचित उपयोग हो सकेगा। जिससे पशुपालको को आर्थिक फायदा पहुँचेगा। कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने कहा कि पशुपालकों की हितार्थ यह एक महत्वकांक्षी परियोजना है जिससे सभी विभागों के सहयोग से ग्राम स्तर पर इसका क्रियान्वयन किया जायेगा। वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने गोबर–गोमूत्र प्रशिक्षण अभियान के बारे में विस्तृत जानकारी दी। इस कार्यशाला में एस.के. आर.ए.यू. के निदेशक अनुसंधान प्रो. पी.एस. शेखावत, निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. सुभाष चन्द्र बलोदा, नाबार्ड के रमेश तांबिया, पशुपालन विभाग के डॉ. वीरेन्द्र नेत्रा, कृषि विभाग के डॉ. कैलाश चौधरी, राजस्थान गौ सेवा परिषद के अध्यक्ष हेम शर्मा, उपाध्यक्ष अरविंद मिढ्ढा सहित राजुवास के वित्त नियंत्रक प्रतापसिंह पूनियां, अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. एस.सी. गोस्वामी, निदेशक अनुसंधान प्रो. हेमन्त दाधीच, परीक्षा नियंत्रक प्रो. उर्मिला पानू, निदेशक मानव संसाधन विकास प्रो. बी.एन. श्रृंगी, निदेशक क्लिनिक्स प्रो. जी.एस. मेहता आदि मौजूद रहें।

यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोंसिबिलिटी

गाढ़वाला में पशुपालक संगोष्ठी का आयोजन

वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पाँसिबिलिटी के अन्तर्गत गोद लिए गांव गाढ़वाला में 30 मई को पशुपालक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पशुचिकित्सा एवं पशु पालन प्रसार शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. राहुल सिंह पाल ने बकरी पालन एवं डेयरी उद्योग की वैज्ञानिक तकनीकों के बारे में विस्तार से बताया। इसके साथ ही खनिज लवण, संतुलित आहार एवं हरे चारे का महत्व बताया। डॉ. अमित कुमार, सहायक आचार्य, पशु प्रसुति रोग विभाग ने पशुओं में बांझपन की समस्या एवं निवारण, गर्मी के लक्षण, कृत्रिम गर्भाधान तथा गर्भावस्था के दौरान सावधानियों के बारे में विस्तार से बताया। डॉ. नीरज कुमार शर्मा, समन्वयक, यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पाँसिबिलिटी ने बताया कि इस पशुपालक संगोष्ठी में ग्रामवासियों ने सक्रिय भागीदारी निभाई तथा विषय विशेषज्ञों द्वारा उनकी समस्याओं का निराकरण किया गया। इस अवसर पर अखिल भारतीय समन्वित शोध परियोजना (मारवाड़ी बकरी) के पशुधन सहायक राजेन्द्र सिंह तथा भंवर सिंह का सहयोग रहा।

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–जून, 2022

पशु रोग	पशु	अत्यधिक संभावना	अधिक संभावना	मध्यम संभावना	बहुत कम संभावना
बबेसिओसिस	गाय	उदयपुर	–	–	–
लंगड़ा बुखार	गाय, भैंस	–	–	–	अजमेर, बारां, भीलवाड़ा, बीकानेर, चूरू, दौसा, धोलपुर, गंगानगर, जयपुर, जैसलमेर, झालावाड़, जोधपुर, नागौर, पाली, प्रतापगढ़, सीकर, टोंक, उदयपुर
ब्लू टंग रोग	भेड़	–	–	–	हनुमानगढ़, पाली
फड़किया रोग	भेड़, बकरी	चूरू, जयपुर	–	–	–
खुरपका–मुंहपका रोग	गाय, भैंस, भेड़, बकरी, ऊंट	उदयपुर	जयपुर	–	–
गलघोंटू रोग	गाय, भैंस	–	–	–	अलवर, भीलवाड़ा, बूंदी, बीकानेर, चित्तोड़गढ़, गंगानगर, पाली
पी.पी.आर. रोग	बकरी	चूरू	–	बाड़मेर, जोधपुर	अजमेर, भीलवाड़ा, बीकानेर दौसा, डूंगरपुर, जयपुर, जैसलमेर, झुंझुनू, करौली, कोटा, नागौर, पाली, प्रतापगढ़, सीकर, उदयपुर
माता रोग	भेड़, बकरी	हनुमानगढ़	–	–	–

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. आर.के. सिंह, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, एवं डॉ. जे.पी. कच्छावा, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर। फोन नं. 0151-2543419, 2544243, 2201183 टोल फ्री नम्बर 18001806224

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरू)

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ द्वारा 6, 13, 17, 21, 26 एवं 31 मई को आयोजित एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 216 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ (श्रीगंगानगर)

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ द्वारा 6, 9, 11 एवं 20 मई को आयोजित एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविर एवं 13 एवं 25 मई को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविरों में 237 पशुपालकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया (नागौर)

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया–लाड़नू द्वारा 7, 10, 17, 24 एवं 28 मई को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरो का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 145 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर)

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा दिनांक 6 एवं 9 मई को गांव नांगला बघेरा एवं सुरोता में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर में 49 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक द्वारा 6, 9, 17, 21, 25 एवं 30 मई को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 229 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर)

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा 6, 10, 17, 24, 27 मई को ऑनलाइन एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 216 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा द्वारा 5, 9, 12, 17 एवं 20 मई को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 121 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुन्दा (चित्तौड़गढ़)

पी.वी.के. बोजुन्दा द्वारा 7, 10, 24 एवं 30 मई को आयोजित एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 87 पशुपालकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर द्वारा दिनांक 10, 17, 21, 23, 28 एवं 30 मई को आयोजित एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 201 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं द्वारा 5, 9, 11, 13, 16, 20, 23 एवं 26 मई को एक दिवसीय ऑनलाइन प्शुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों से 236 पशुपालक एवं कृषक लाभान्वित हुए

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 16, 23 एवं 26 मई को गांव लाम्बी डूंगरी, देवपाल एवं मन्नाम गांवों में एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों से 90 पशुपालक एवं कृषक लाभान्वित हुए

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही

पी.वी.के., सिरोही द्वारा 9, 11, 13, 19, 21, एवं 23 मई को आयोजित एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों से 134 पशुपालक एवं कृषक लाभान्वित हुए।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर द्वारा 13, 16, 20, 23 एवं 25 मई को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 83 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 24 एवं 28 मई केन्द्र परिसर में तथा 6, 13, 20, 21 एवं 26 मई को गांव राजोरा कला, चौराखेरा, चितौरा, पिपेहरा, इन्डौली एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 210 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा 5,12,18,24 मई को गांव हरदासवाली, पल्लु, डाबरी एवं नीथराना में आयोजित एक दिवसीय कृषक व पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 135 किसानों एवं पशुपालकों ने भाग लिया। 31 मई 2022 को केवीके कैम्पस में गरीब कल्याण सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें 590 कृषक व पशुपालकों ने भाग लिया।

पशुधन में एनाप्लाज्मोसिस रोग : उपचार एवं रोकथाम

पशु प्रबंधन में एनाप्लाज्मोसिस रोग एक आम और महत्वपूर्ण समस्या है। दरअसल यह रोग मुख्यतः गाय, भैंस एवं बछड़ों में पाया जाता है। यह रोग अति संक्रामक रिकेट्सीयल जनित रोग है जो कि एनाप्लाज्मा मार्जिनल एवं एनाप्लाज्मा सेंट्रल नामक रक्त परजीवी द्वारा होता है। ये परजीवी रक्त के लाल रूधिर कणिकाओं में पाया जाता है। पशुओं में यह रोग प्रायः वर्षा ऋतु में अधिक फैलता है क्योंकि इस रोग को फैलाने वाले वाहक जैसे चिचड़ियां एवं मक्खी–मच्छरों की संख्या इस मौसम में अधिक होती है। इस रोग का पता लगाने के लिए रक्त के नमूने की जांच की जाती है जिससे लाल रूधिर कणिकाओं में परजीवी को सूक्ष्मदर्शी द्वारा देखा जा सकता है इसके अलावा अन्य तरीके जैसे मॉलिक्यूलर टेस्टिंग (सी.एफ.टी तथा एफ.ए.टी) द्वारा भी परजीवी का पता लगाया जा सकता है।

लक्षण :

- शुरूआती दौर में तेज बुखार (106 डिग्री फारेनहाइट) आना।
- खून की कमी होना क्योंकि यह परजीवी रक्त कोशिकाओं को नष्ट कर देता है।
- दूध उत्पादन में गिरावट देखना।
- श्लेष्मा झिल्ली का पीला पड़ना।
- भूख न लगना।
- कमजोरी व वजन में कमी आना।
- ज्यादा गंभीर परिस्थिति में पीलिया जैसी समस्या भी देखी जाती है।
- श्वांस लेने में परेशानी व गर्भपात जैसी समस्याएं उत्पन्न होना।

उपचार :

- चिंचड़ को पशुओं के शरीर पर से हटाने के लिए कीटनाशक दवाईयां जैसे फ्लुमेथ्रिन, डेल्टामेथ्रिन का छिड़काव करें।
- पशुओं को तीन दिन तक टेट्रासाक्लिन इंजेक्शन 6 से 10 मिलीग्राम प्रति किग्रा शारीरिक भार की दर से मांसपेशियों में दिया जाता है तथा साथ में विटामिन एवं खनिज मिश्रण भी दिया जाता है।
- ज्यादा खून की कमी होने पर आयरन का इंजेक्शन भी लगाया जाता है।
- ज्यादा गंभीर परिस्थिति में अपने नजदीकी पशुचिकित्सालय या डाक्टर से संपर्क करें।

रोकथाम :

- कम से कम एक हफ्ते में 2 से 3 बार पशुओं के आवास स्थल को कीटनाशक दवाइयों से धोना चाहिए, जिससे चिचड़ियों व अन्य जीव–जन्तु नष्ट हो जायं साथ ही दीवारों में मौजूद दरारों को भी भरवाएं क्योंकि यह चिचड़ियों का प्रजनन स्थान होता है।
- पशुओं के स्वास्थ्य की समय–समय पर जांच करवाएं तथा रोगी पाये जाने पर उसे बाकी पशुओं से अलग कर दें।
- 6–12 महीने की आय के पशुओं में इस रोग के टीके जैसे–एनाप्लाज, प्लाजवैक तथा एनावैक लगाये जाने चाहिए तथा प्रति वर्ष इन्हें दोहराया जाना चाहिए।
- पशुओं के टीकाकरण के दौरान हर बार नई सुई का उपयोग करें।
- पशुओं की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने के लिए उन्हें संतुलित एवं भरपूर मात्रा में आहार प्रदान करना चाहिए।

डॉ. लक्ष्मीनारायण सांखला, डॉ. लक्ष्मीकांत एवं डॉ. अभिनव मीणा
वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

क्या है लम्पी स्किन डिजीज या गांठदार त्वचा रोग

हाल ही में राजस्थान के कई जिलों में ही नहीं समूचे देश के कई प्रदेशों की गायों व भैसों में एक संक्रामक रोग जिसे की लम्पी स्किन डीजिज के नाम से जाना जाता है, पांव पसार रही है। इस रोग में पशु के पूरे शरीर पर गांठे बन जाती है तथा यह संक्रामक रोग विषाणु द्वारा होता है। यह विषाणु भेड़ व बकरी माता के विषाणु से सम्बन्धित है। यह रोग रक्त परजीवी जैसे मच्छर अथवा मक्खियों के माध्यम से फैलता है। इसके अलावा संक्रमित पशु के चारे, दाने व घाव से भी फैल सकता है। इस रोग में मृत्यु दर कम है तथा गंभीर स्थितियों में यह 10 प्रतिशत तक हो सकती है परन्तु दूध उत्पादन घटने से पशुपालक को आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है।

रोग के लक्षण :

- इस रोग का संक्रमण काल 4–14 दिन तक होता है।
- पशु को तेज बुखार आता है जो लगभग एक सप्ताह तक रहता है।
- पशु की त्वचा के नीचे स्थित लसिका ग्रंथियों में सूजन आ जाती है।
- पशु के शरीर पर 2–5 सेमी की मोटी–मोटी गांठे बन जाती है।
- गांठों के फटने पर तरल द्रव्य निकलता है। गांठे बाद में घाव में बदल जाती है।
- पशु की त्वचा मोटी हो जाती है।
- दुधारू पशुओं का दूध उत्पादन घट जाता है।
- कभी–कभी पशु की आंख में भी गांठे बन जाती है जिससे पशु अंधे हो जाते हैं।
- ग्याभिन पशुओं का गर्भपात हो जाता है।
- इस रोग से संक्रमित पशुओं में द्वितीयक जीवाणु संक्रमण से न्यूमोनिया और थनैला रोग होने की संभावना बढ़ जाती है।

रोग का इलाज :

- चूंकि यह विषाणु जनित संक्रमण है इसलिए इसका कोई इलाज उपलब्ध नहीं है। हालांकि द्वितीयक जीवाणु संक्रमण से बचने के लिए एंटीबायोटिक तथा दर्द व सूजन निवारक दवाओं के उपयोग से पशु 3 से 4 सप्ताह में ठीक हो जाते हैं।
- त्वचा के घावों की रोज एंटीसेप्टिक दवा से सफाई करनी चाहिए।
- इस रोग से बचाव ही इलाज है। संक्रमण के पश्चात ठीक हुए पशुओं में आजीवन प्रतिरक्षा विकसित हो जाती हैं।
- भेड़–बकरी माता रोग से बचाव हेतु विकसित किया गया टीका कुछ हद तक इस रोग से सुरक्षा प्रदान करता है।

रोग से बचाव –

- पशुशाला और परिसर में सख्त जैव सुरक्षा उपायों को अपनाएं।
- रोग से ग्रसित पशुओं को झुंड से अलग रखें।
- संक्रमित पशु की सार–संभाल करने वाले व्यक्ति को दस्ताने, जूते और अन्य सुरक्षा उपकरण पहन कर ही पशु के पास जाना चाहिए।
- नए पशुओं को झुंड में शामिल करने से पहले अलग स्थान पर कुछ दिनों के लिए निगरानी में रखें।
- पशु आवास में रक्त परजीवियों, मक्खी, मच्छर आदि के नियंत्रण के लिए प्रभावी उपाय करें।
- पशु आवास के आस–पास ठहरे हुए पानी के स्थान न बनने देंवें।
- पशु आवास से जल निकासी की सुचारू व्यवस्था स्थापित करें।
- संक्रमित पशु का इलाज समय रहते पशुचिकित्सक से ही करवाएं।

डॉ. दीपिका धूड़िया
सहायक प्राध्यापक, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

पशुधन उत्पादन में पशु पोषण का महत्व

मनुष्यों की तरह पशुओं को सभी आवश्यक पोषक तत्वों, तरल पदार्थ, खनिज और विटामिन युक्त संतुलित आहार की आवश्यकता होती है। उचित पोषण पशुओं की वृद्वि, विकसित होने और प्रजनन करने की शक्ति देता है साथ ही संक्रमण से लड़ने के लिए मजबूत प्रतिरक्षा प्रदान करता है। पशु को आहार देते हैं तो यह सुनिश्चित करने की जरूरत है कि प्रत्येक राशन अपने विभिन्न जीवन चरणों के दौरान प्रत्येक पशु की आवश्यक आहार उनकी आवश्यताओं को पूरा करता है। उदाहरण के लिए मवेशियों की पोषण संबंधी जरूरतें सुअरों से बहुत अलग होती है और दूध पिलाने वाली गाय का आहार भी बछड़े के आहार से भिन्न होता है। पशुपालक पशुधन के लिए आहार की खुराक जोड़कर अपने आहार की विशिष्ट पोषण सामग्री को हमेशा बढ़ा सकते हैं।

पशुधन उत्पादन में पशु पोषण का महत्व :

❖ **कुपोषण सम्बन्धी कमियों और बीमारियों को रोकने में सहायक :** ऐसी सैकड़ों पोषण सबंधी बीमारियां है जो पशुधन को प्रभावित करती हैं। इनमें से अधिकांश बीमारियां या तो कुपोषण या खनिजों और विटामिन की कमी के कारण होती है। कमी और कुपोषण पशुओं की वृद्धि, विकास और उत्पादन को गंभीर रूप से प्रभावित करते हैं, कुछ गंभीर मामलों में अपरिवर्तनीय स्वास्थ्य स्थितियां, विकास या यहां तक कि मृत्यु भी हो सकती है। आधुनिक कृषि तकनीकों के कारण पोषण संबंधी बीमारियां एक समस्या बन गई है। चूंकि अधिकांश पशुओं का दूध उत्पादन अधिकतम करने के लिए निर्मित सांद्र मिश्रण देते हैं, इसलिए उनमें कुछ आवश्यक खनिज तत्वों और विटामिनों की कमी हो सकती है। अतः विटामिन बी–12 और विभिन्न खनिजों वाले नमक आधारित आहार योजक जैसे उच्च मूल्य के पूरक के साथ पशुधन आहार को उच्च गुणवत्ता युक्त बनायें। उदाहरण के लिए मवेशियों में विटामिन बी–12 दुग्ध उत्पादन और वृद्धि की उच्च ऊर्जा जरूरतों की पूर्ति हेतु जरूरी है।

❖ **प्रजनन में सुधार :** पशुओं में पोषण और प्रजनन क्षमता के बीच सीधा संबंध पाया जाता है। आहार खिलाने की विधियों, राशन की गुणवत्ता, मात्रा और इससे भी महत्वपूर्ण यह कि आहार का पोषण मूल्य किसी पशु के प्रजनन स्वास्थ्य को गहराई से प्रभावित करता है। कुछ खनिजों जैसे कैल्शियम, जिंक, मैग्नीशियम, सेलेनियम और मैंगनीज की कमी अपरा का रूकना (प्लेसेंटल रिटेंशन) और स्तनशोथ (मेसटाईटिस) के जोखिम को बढ़ाता है जिससे गर्भ और प्रसव हार्मोन के बीच संतुलन बिगड़ जाता है और गायों में प्रजनन क्षमता कम हो सकती है। अनुचित पोषण से भ्रूण का विकास अच्छे ढंग से नहीं होता है, जन्म के बाद विकास अवरूद्व हो सकता है और गंभीर मामलों में बछड़ों की मृत्यु दर अधिक हो सकती है। पोषण नर पशुओं की प्रजनन क्षमता को भी प्रभावित करता है। प्रजनन उद्देश्यों के लिए पाले गए बैल, स्टैलियन, रोस्टर और ईल्स को अपने स्पॉन के स्वास्थ्य और व्यवहार्यता को सुनिश्चित करने के लिए विशेष आहार की आवश्यकता होती है।

❖ **पैदावार बढ़ाने में सहायक :** सामान्य तौर पर, उचित पोषण पशुधन में अच्छे स्वास्थ्य को बढ़ावा देता है, जिसके परिणामस्वरूप उच्च उत्पादकता होती है। स्वस्थ एवं अच्छी तरह से खिलाए गए मवेशी और कुक्कुट अधिक दूध, मांस और अंडे का उत्पादन करते हैं। एक समृद्ध आहार न केवल पैदावार में सुधार करता है बल्कि पशुधन उत्पादन की गुणवत्ता को भी बढ़ाता है। जब तक पशुओं को सही तरीके से खिलाया जाता है, तब तक कृषि उपज को बढ़ावा देने के लिए कानो को काटने या अनुचित साधनों का उपयोग करने की आवश्यकता नहीं है।

पशुधन उत्पादन में उचित पोषण के महत्व को कम करके नहीं आंका जा सकता है। आहार पशुधन के समग्र स्वास्थ्य और उपज के प्रदर्शन को निर्धारित करता है। पशुपालन व्यवसाय की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि आप अपने पशुओं को कैसे खिलाते हैं, कैसे संभालते हैं और उनकी देखभाल कैसे करते हैं। पशु इस बात के प्रति अत्यधिक संवेदनशील होते हैं कि वे क्या खाते है और कैसे खाते हैं, इसलिए पशुओं को हर आवश्यक पोषक तत्व, सही मात्रा में और उचित समय पर उपलब्ध कराना सुनिश्चित करें।

डॉ. नवीन कुमार शर्मा एवं डॉ. मोनिका जोशी
वेटरनरी कॉलेज, नवानियां (उदयपुर)

सफलता की कहानी — एडवोकेट देवेन्द्र शर्मा बने प्रगतिशील पशुपालक

प्रगतिशील पशुपालक श्री देवेन्द्र शर्मा, निवासी किशनपुरा तकिया, तहसील–लाडपुरा, जिला–कोटा ने कृषि के साथ–साथ पशुपालन व्यवसाय को अपनाने हेतु दो वर्ष पूर्व पांच उन्नत नस्ल के पशुओं से शुरूआत की। इनके पास 100 बीघा कृषि भूमि है। पेशे से वकील होने के बावजूद भी इनकी रूचि पशुपालन को एक व्यवसाय के रूप में अपनाने की थी। वर्तमान मे इसको यर्थात के धरातल पर साबित कर पशुपालन को एक सफल व्यवसाय के रूप मे आगे बढ़ा रहे हैं। पशु विज्ञान केंद्र, कोटा द्वारा किशनपुरा तकिया गांव में समय–समय पर आयोजित पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में वैज्ञानिक पशुपालन से सम्बन्धित विभिन्न जानकारियां प्राप्त करते हैं। इनका मानना है कि किसान कृषि के साथ–साथ पशुपालन को अपनायें तो आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हो सकती है। वर्तमान में इनके पास लगभग 40 उन्नत नस्ल के पशु हैं जिनमें 20 भैंसें, 10 गायें एवं 10 से 12 छोटे पशु हैं जिससे प्रतिदिन लगभग 300 लीटर दुग्ध प्राप्त कर रहें हैं। इन्होंने पांच लोगों को रोजगार भी प्रदान कर रखा है। पशुओं के लिए चारे की पूर्ति स्वंय के खेत से ही हो जाती है। श्री देवेन्द्र शर्मा अपने पशुओं में कृत्रिम गर्भाधान तकनीक को अधिक महत्व देते है। अनुभव के आधार पर पशुओं में होने वाली मौसमी बीमारियों से न केवल अपने पशुओं को बचाते हैं बल्कि पशुओं के प्राथमिक उपचार पशुचिकित्सक की सलाह से स्वंय कर लेते हैं तथा जरूरत पड़ने पर पशुचिकित्सक की सेंवाऐं भी लेते रहते हैं। पशु विज्ञान केंद्र, कोटा द्वारा इनको समय–समय पर पूरा सहयोग किया जाता है एवं कृमिनाशक दवा का उपयोग, खनिज लवण मिश्रण की उपयोगिता, टीकाकरण ग्याभिन पशुओ की देखभाल, पशुओ में नस्ल सुधार द्वारा दुग्ध उत्पादन में वृद्धि व संतुलित पशु आहार आदि की जानकारी साझा करते हैं। श्री देवेन्द्र शर्मा पशुपालन को अपनाने से खुशहाल जीवन जी रहे है। इनकी पशुपालन से वार्षिक आय लगभग छः लाख रूपये तक हो जाती है। निकट भविष्य मे पशुपालन व्यवसाय को ओर भी वृहद स्तर पर करना चाहते है। श्री देवेन्द्र शर्मा अपनी सफलता का श्रेय पशु विज्ञान केंद्र, कोटा को देते है। **सम्पर्क- श्री देवेन्द्र शर्मा, गांव-किशनपुरा तकिया, तह. लाड़पुरा, जिला-कोटा (मो.9602481422)**

निदेशक की कलम से...

स्वदेशी गोवंश का संरक्षण एवं संवर्द्धन आवश्यक।

स्वदेशी गोवंश भारत की एक पहचान है। गोवंशीय पशुओं में भारत विश्व में प्रथम स्थान रखता है। भारत में आदिकाल से ही गाय के महत्व को स्वीकारा है तथा गाय को एक पूजनीय पशु माना गया है तथा इसे मां की संज्ञा दी गई है। भारत में लगभग 37 प्रकार की गोवंश की नस्ले हैं लेकिन आज समाज की दिशा बदलने के साथ–साथ गाय की दशा भी बदली जा रही है। वर्तमान परिदृश्य में देशी नस्लों के पशुओं की संख्या में तेजी से कमी आ रही है। राजस्थान जैसे शुष्क प्रदेश में पशुपालन एक प्रमुख व्यवसाय है यहां पर स्वदेशी गोवंश की राठी, थारपारकर, साहीवाल, कांकरेच, मालवी एवं गीर जैसी प्रमुख नस्लें हैं, इन स्वदेशी नस्ल के पशुओं में रोग प्रतिरोधक क्षमता तथा गर्मी सहन करने की क्षमता अधिक होती है। इन स्वदेशी पशुओं में बाह्य परजीवी का प्रकोप भी कम होता है। पोषण व आहार की अनुपलब्धता एवं अन्य विपरित परिस्थितियों में भी भली–भांति गुजारा कर लेती है। गीर, साहीवाल व थारपारकर गायों की दूध उत्पादन क्षमता भी अधिक होती है। इतनी विशेषताएं होते हुए भी आज इन विभिन्न नस्लों के पशुओं की संख्या कम होती जा रही है। अतः इनके संरक्षण व संवर्द्धन की विशेष आवश्यकता है। राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर स्वदेशी गोवंश के संवर्द्धन एवं संरक्षण पर विशेष कार्य कर रहा है। विश्वविद्यालय हरिटेज जीन बैंक के अन्तर्गत 8 विभिन्न देशी नस्लों का संरक्षण एवं संवर्द्धन विभिन्न पशुधन अनुसंधान केन्द्रों के माध्यम से कर रहा है। विश्वविद्यालय के अधीन राठी, थारपारकर, साहीवाल, कांकरेच, गीर, मालवी नस्लों के संरक्षण व संवर्द्धन के लिए क्रमशः नोहर व बीकानेर, चांदन व बीकानेर, कोड़मदेसर व बीकानेर, नवानियां (उदयपुर) व झालावाड़ में पशुधन अनुसंधान केन्द्र स्थापित किये गये हैं, जहां पर नस्लानुसार उन्नत किस्म/नस्ल के पशुओं का संरक्षण व संवर्द्धन किया जा रहा है। इन पशुधन अनुसंधान केन्द्रों के माध्यम से किसानों, पशुपालकों एवं गोशालाओं को उन्नत नस्ल के बछड़े व बछड़ी नस्ल सुधार हेतु प्रदान किये जा रहे हैं तथा विश्वविद्यालय के विभिन्न जिलों में स्थित पशु विज्ञान केन्द्रों के माध्यम से प्रशिक्षण आयोजित कर पशुपालकों व किसानों को स्वदेशी गोवंश पालन के प्रति जागरूक किया जा रहा है।

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर

RAJUVAS
e-पशुपालक चौपाल

।।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।।

माह के प्रत्येक द्वितीय एवं चतुर्थ बुधवार को
समय : दोपहर 12.00 बजे से 1.00 बजे तक

राजुवास के आधिकारिक फेसबुक पेज से सीधा प्रसारण
LIVE https://www.facebook.com/RAJUVASOfficialWebPage

पशुचिकित्सा सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने के लिए
टोल फ्री हैल्पलाईन
1800 180 6224

"धीणे री बात्यां"
पशुपालकों के लिए रेडियो कार्यक्रम
माह के तीसरे गुरुवार को
सायं 5.30 से 6.00 बजे तक
प्रदेश के 17 आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण

मुख्य संपादक
प्रो. (डॉ.) आर. के. धूड़िया
संपादक
डॉ. दीपिका धूड़िया
डॉ. मनोहर सैन
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com
पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में

....

....

....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया